भैंरो बाबा

मां दुर्गा

श्री कल्कि बाल वाटिका

मासिक पत्रिका

हनुमान जी

गुरूवर लक्ष्मीनारायण जी

अंक 3 | कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहना | अप्रैल 2014

चन्द्रेश्वर तीर्थ के आस पास के नज़ारे को देखकर दिल्ली वालों ने कहा-नहीं लगता हम सम्भल में हैं

900 साल की मुगलों की गुलामी, 150 वर्ष की अंग्रेजों की गुलामी और 70 वर्ष से स्वतंत्र भारत में काले अंग्रेजों की गुलामी से उपेक्षित (क्षीण हुए) सतयुग से स्थापित भगवान शंकर जिस त्रिकोण पर बसी नगरी की रक्षा कर रहे हैं जहाँ (68 तीर्थ, 19 कूप) सृष्टि के आरंभ में विश्वकर्मा जी द्वारा संभल में बनाए गए थे वहाँ जितनी भी जिससे लूट खसोट हुई है, उसके बाद भी बचे तीर्थों में से चंद्रेश्वर तीर्थ पर 30.03.2014 को सुश्री इंदु बंसल द्वारा लिया गया प्रोजेक्ट सम्भल तीर्थ सुप्त तीर्थ जागरण हेतू प्रति मास श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ किया। श्री कल्कि बाल वाटिका के सदस्यों द्वारा पहले दो कुंडीय यज्ञ बृजघाट गंगा तट पर भी किया। प्रस्तुत है उसकी कुछ झलकियाँ जो दो संहारको द्वारा कल्कि भक्तों को उत्साहित-पल्लवित करती है

* उनके असम्भव कार्यों को सम्भव करती सम्भल नगरी (जैसे भारतवर्ष से बनी इंडिया की तरह) बनी भीम नगर नगरी पुन: श्री कल्कि सहस्त्रनाम द्वारा बनी भीम नगर से सम्भल नगरी।

* यही नहीं बच्चों पहले सम्भल कस्बा था जिसे जिला मुरादाबाद से सब मदद मिलती थी। अब दो संहारकों ने इसे बना दिया जिला जो अब अपने नज़दीकी गाँवों को मदद देगा। अर्थात : **जल्लाद बगलें झाँकने लगे उल्टी भीख से मांगने लगे।**

झलकियाँ

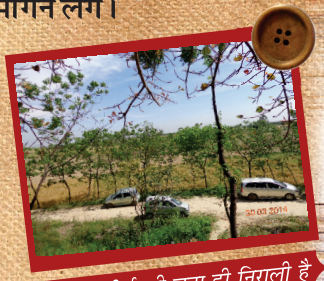
चंद्रेश्वर तीर्थ की छटा ही निराली है

* चंद्रेशवर जाते हुए गाँव वालों ने गाड़ी को अधर उठाकर श्री कल्कि भक्तों की बस को रास्ता दिया।

* जब श्री अनुज गुप्ता-श्री कमल बंसल ने पहाड़ी से बस को आगे बढ़ते न देखा तो तुरन्त ड्राईवरों द्वारा बस में बैठे कल्कि भक्तों को कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ में बुलाया और बाद में छुड़वाया।

* मनोज पाण्डेय एवं पदम गोयल के प्रयास से सभल गई बस ने कल्कि भक्तों को धन्य किया

* अमावस्या की वजह से गंगा तट पर काफी भीड़ के कारण गंगा स्नान किए बिना भावुकता छोड़ दो कुण्डिय यज्ञ में पहले हवन कराकर सबको गंगा स्नान कराया।

* चंद्रेश्वर में दो कुण्डिय यज्ञ बगुलामुखी एवं श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ किया एवं शहद मिली खीर से पितृों को संतुष्ट किया।

* चंद्रेश्वर पर ही सुश्री इंदु बंसल-(सुश्री नीलम वार्ष्णेय-सुश्री अंजू रस्तोगी द्वारा) जो यज्ञ के निमित्त भंडारा बनवाते हैं उसमें से ही सभी भक्तों ने प्रसाद पाया।

* **श्री मनोज पांडे एवं श्री पदम गोयल जी की हिम्मत तो देखो —** गंगा तट पर दो कुण्डिय यज्ञ-गंगा स्नान-चंद्रेश्वर पर सुप्त तीर्थ जागरण हेतु दो कुण्डिय कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ के उपरांत भण्डारे के बाद श्री मनोज पांडे श्री कल्कि भक्तों को श्री कल्कि विष्णु मंदिर ले गए। वहाँ जाकर समस्त कल्कि भक्तों की तरफ से सामूहिक कल्कि भगवान को प्रसाद, पुष्प, दक्षिणा चढ़ाकर जमकर कीर्तन किया। प्यारे बच्चों श्री कल्कि बाल वाटिका गौरवान्वित है समय समय पर आने वाले ऐसे कर्मठ कल्कि भक्तों के सुकार्यों से जो भगवान श्री कल्कि-श्री गुरु जी के कलेजे के कार्य नि:स्वार्थ उल्टा पुल्टा (कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहना) सुनते हुए भी करते हैं। वास्तव में इसके लिये श्री मनोज पाण्डेय एवं श्री पदम गोयल साधुवाद के पात्र हैं।

चंद्रेशवर में श्री रमापते सहस्त्रनाम यज्ञ करते हुए लगभग 130 भक्त

हिल स्टेशन जैसा खजूरों के वृक्षों से घिरा चंद्रेश्वर तीर्थ

हमारे प्रभु कल्कि परम उदार

-सुश्री नेहा चौधरी कोलकाता 09163448228

सुश्री नेहा चौधरी अपने पति श्री वरूण चौधरी और बेटे के साथ

मेरा जन्म उच्च कुल के धनाढय परिवार में हुआ। 2009 में मेरा विवाह हुआ। मुझे अपनी सोच और इच्छा से बेहतर वर मिला। अपने सुसराल में आकर मैंने कल्कि जी की लीला को जाना। कल्कि जी पर अटूट विश्वास के कारण सुश्री इन्दु बुआ से समय-समय पर स्वप्नों के अर्थ पूछ पूछकर उपचार करने के उपरांत मुझे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। प्रभु श्री कल्कि ने मुझे वो दिया जो मेरे भाग्य में भी नहीं था।

अब तो मुझे अच्छा वर और पुत्र पाने के बाद ऐसा लगने लगा कि मुझे जीवन में सब कुछ मिल गया। बच्चों ऐसी है कलियुग की लीला कि कुछ महीनों बाद मेरे मन में औरों की तरह बदलाव आया कि अरे यह तो सब मेरे भाग्य में है ही। मैं भी पढ़ी लिखी क्या फालतू की बातें सोचती हूँ? अत: मैं अपने रास्ते से विचलित हो गई और मैंने पूजा करना छोड़ दिया। अपने दुनियादारी के कामों में व्यस्त होकर कल्कि जी को पूर्णत: भूल बैठी।

मेरे पुत्र होने के दो वर्ष बाद अचानक मेरे जीवन में उथल-पुथल शुरू हो गई। शारीरिक और मानसिक रूप से मैं परेशान रहने लगी। मेरे वैवाहिक जीवन में भी समस्याएं आने लगीं। इन दो सालों में कल्कि जी ने मुझे कई बार चेताया लेकिन मैंने उसे बहुत साधारण तौर पर लिया।

कलियुग का दौर शुरु

क) अक्टूबर 2011 से मेरी बीमारी की शुरूआत हुई। मैं तनाव (अवसाद, डिप्रेशन) में चली गई। मुझे ठीक होने में दो महीने लगे।

ख) दिसंबर में मैं एक दुर्घटना का शिकार हुई जिसमें मेरे हाथ के टिशू नष्ट हो गए। उसे ठीक होने में मुझे 6-8 महीने लग गए।

ग) अप्रैल 2012 में मुझे बुखार हुआ। पहले मुझे लगा कि वायरल फीवर है, 3-4 दिन में उतर जाएगा। लेकिन उसे ठीक होने में 6 से 8 महीने लगे। हमने हर तरह के डॉक्टर को दिखाया। सी.टी.स्कैन भी करवाया लेकिन कहीं कुछ भी हाथ नहीं लगा। मेरा बुखार ठीक होने का नाम ही नहीं ले रहा था। मैंने काफी उपचारों के भी हाथ लगाए उनसे भी कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। मैं मानसिक और शारीरिक रूप से पूरी तरह टूट चुकी थी। मैं डिप्रेशन में जाने लगी थी कि इसी बीच मेरे साथ एक ऐसी घटना हुई जिसने मुझे और मेरे पति को पूरी तरह तोड़ दिया।

मेरा विश्वास भगवान कल्कि पर से तो उठ गया था और मैंने साधारण पूजा पाठ जो धनाढय परिवारों में प्राय: चलती है वह तक भी। सब छोड़ दी थी। यहाँ तक कि मंदिर भी जाती तो किसी भी भगवान के आगे हाथ नहीं जोड़ती थी बस बैठ कर वापिस आ जाती थी।

ऐसा नहीं था कि कल्कि जी ने मुझे इन सब बातों आगाह न किया हो। उन्होंने तो मुझे कई बार बताया था लेकिन मैंने उनके निर्देशों को बुआ जी के द्वारा बताए (बहुत से कल्कि भक्तों की तरह) अनदेखा कर रखा था। स्वप्नानुभवों के उपचार भी पति के कहने पर मैंने गुस्से में निकालने बंद कर दिए और हर चीज का दोष कल्कि जी को देने लगी। कल्कि जी के आगे रो-रोकर कहती मुझे अब नहीं जीना। मैं इतनी परेशान रहने लगी कि मेरा वैवाहिक जीवन टूटने की कगार पर थी।

कल्कि जी हमारी सुध लेते हैं

मेरे बुखार को 4 महीने हो चुके थे। एक दिन सुबह-सुबह मेरे पति ने परेशान होकर कल्कि भगवान से कहा हे प्रभु अब तो अति हो चुकी है। उसी दिन सुबह मेरे पति के पास मामाजी (श्री ओ.पी.गुप्त) का फोन दिल्ली से आया। उन्होंने समस्या पूछी और कहा कि अपनी पत्नी से मेरी बात करवा दो। उस दिन मैंने पहली बार मामाजी से बात की थी। उन्होनें फोन पर मुझसे कहा कि रानी बेटी तू बिल्कुल चिंता मत कर अब तू देखना कैसे ठीक हो जाएगी। बस तू वैसे कर जैसे मैं कह रहा हूँ। मैं तो बस एक माध्यम हूँ करने वाले तो कल्कि जी हैं। मैं तो वही कर रहा हूँ जो मेरे कल्कि जी ने मुझसे करने को कहा है। मामाजी से बात करते हुए सोच कर मैं आश्चर्यचकित थी कि जो बात कल्कि जी और मेरे बीच में हुई थी वो सब उन्हें कैसे पता है? मामाजी से बात करते समय मेरा दिल भर आया और मैं फूट फूट कर रोने लगी। उस दिन मुझे अहसास हुआ कि मैं कितनी गलत थी जो यह सोच रही थी कि भगवान हमारी सुधि नहीं लेते। आज मुझे अहसास हो रहा था कि एक बच्चा क्रोध में अपने माँ बाप के लिए बुरा सोच सकता है लेकिन माता पिता का प्रेम कभी भी अपने बच्चों के लिए कम नहीं होता। मैंने भी तो यही किया कल्कि जी को भूल गई। उनका नाम लेना छोड़ दिया। लेकिन मेरे कल्कि जी ने मुझे नहीं छोड़ा। मामाजी ने मुझे पूरे 2 महीने का समय दिया। मैं स्वप्नानुभव निरंतर उन्हें लिख कर भेजती रही जिसका वो अर्थ बता देते थे। उपचारों के करने से और कल्कि जी से पुन: जुड़ने से हफ्ते भर में ही मेरे स्वास्थय में सुधार आना शुरू हो गया।

अब मामाजी ने मुझे मेरी गलतियाँ भी बताईं। मेरी शादी हुई मुझे पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई फिर मैं कल्कि जी को भूल गई। ना तो हमने उनके प्रचार का काम किया और न ही उनका आभार प्रकट किया।

मैं और मेरे पति मामाजी और हमारी बुआ सुश्री इंदू बंसल के बहुत

आभारी हैं कि उन्होंने हमारा मार्गदर्शन किया। इंदु बुआ की बात अब मुझे काफी समय बाद समझ आई कि वह क्या कहती थी क्या कहना चाहती थी। मैं कल्कि जी की बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे इतना अच्छा परिवार सास, ससुर, नन्द और पति दिये जिन्होंने मुझे ठीक होने में 6 महीने सहयोग दिया।

जब मैं बिल्कुल ठीक हो गई तो मुझे मन में डर सा लगा कि कहीं फिर से कुछ न हो जाए। लेकिन मुझे उसी दिन स्वप्नानुभव हुआ कि मैं और मामाजी साथ -साथ चल रहे हैं। मैं मामाजी * से कह रही हूँ कि **आप मुझे भूल गए। क्या आपको याद है मैं वही हूँ जिससे आप फोन पर बात करते थे। इस पर वह बोले हाँ मुझे याद है मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगा तुम चिंता मत करो।** अब मेरा विश्वास कल्कि जी पर अटूट हो गया है। मुझे हर पल ये अहसास रहता है कि कल्कि जी हर पल मेरे साथ हैं। * स्वप्न अनुभव एक सम्पदा ग्रंथ पृष्ठ 5 मानू मैं न मानू मामाजी को अनुभव में सिर्फ श्री कल्कि जी का एक रूप समझे।

निरंतर बढ़ते राजा रानियाँ
भगवान श्री कल्कि के मूर्ति स्थापना महोत्सव

8 अप्रैल 2014
स्थान : रायसिंह नगर, राजस्थान
सुश्री संजू गड़ौदिया: 9312539397

13 अप्रैल 2014
स्थान: सर्व दर्शन सेवा आश्रम, भूपत वाला रोड, ललिता आश्रम के पास हरिद्वार, उत्तराखण्ड
श्री राम नारायण गोयल 09899463111

20 अप्रैल 2014
स्थान : प्राचीन माता मंदिर महिला कॉलोनी, झील गांधी नगर, दिल्ली-31
संपर्क : श्री राकेश अग्रवाल-9810654193
सुश्री संजू गड़ौदिया-9312539397

20-21-22 अप्रैल 2014
स्थान : वाराही मंदिर
गोण्डा (यू.पी.)

24-25-26 अप्रैल 2014
स्थान : नागेश्वर महादेव मंदिर
अयोध्या (यू.पी.)

1 अप्रैल 2014 को भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की चल स्थापना साहिबाबाद, श्याम पार्क एक्सटेंशन, डी-147 में श्री गौरी शंकर मंदिर में धूमधाम से संपन्न हुई

संभल में श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ एवं संकीर्तन

4 मई 2014 को माँ चामुंडा मंदिर में पापमोचन तीर्थ एवं महिष्मती तीर्थ के लिए
1 जून 2014 को श्री कल्कि विष्णु मंदिर में कालोदक तीर्थ के लिए

जो भक्तजन श्री कल्कि सहस्त्रनाम के दो कुंडीय यज्ञ में बस द्वारा मात्र 250 रु में जाना चाहें वह श्री मनोज पांडे को अपनी सीट बुक करवा सकते हैं। 30 मार्च 2014 रविवार को बस वाले यात्रियों को चंद्रेश्वर आने एवं जाने में जो परेशानी हुई उसे समझते हुए मई एवं जून में दो कुंडीय हवन एवं संकीर्तन एक ही स्थान पर रखने की व्यवस्था की गई है।

योगमाया मंदिर में भगवान श्री कल्कि एवं उनका भवन नए रूप में

27 अप्रैल 2014 को योगमाया मंदिर महरौली में भगवान श्री कल्कि का संकीर्तन एवं हवन

समय : प्रातः 10 बजे से शाम 5 बजे तक

श्री कल्कि बाल वाटिका कैन कैन
1903, चांदनी चौक दिल्ली-6
संपर्क : श्री योगेश गुप्त : 9311033445

चलो बुलावा आया है माता ने बुलाया है

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी कल्कि भक्तों का मां वैष्णो देवी जाने का कार्यक्रम 21 जून 2014 को श्री आदर्श कुमार सिंघल के तत्वाधान में है। पिछले वर्ष सब भक्तों के आग्रह पर आने जाने के लिए ए.सी. कोच में टिकट कराए जाएंगे। जो भी भक्त जाना चाहते हैं वह 20 अप्रैल 2014 तक निम्न सदस्यों को अपने जाने की सूचना दे दें।

आदर्श सिंघल- 9818525601, पूजा गुप्त-9811858723
संजू गड़ौदिया-9312539397, मनोज पाण्डेय-9212703815
मोनू जी- 9911074012

आपबीती

कल्कि नाम लेने के लिए हमें अपनी नियमित पूजा से कुछ छोड़ने की जरूरत नहीं सिर्फ कल्कि नाम रूपी गंगाजल मिलाना है

—सुश्री सुनीता गुप्त
08459475245

मुझे कल्कि नाम से जुड़े हुए मात्र डेढ़ वर्ष हुआ है। भगवान श्री कल्कि के नाम जाप से मुझे व मेरे परिवार को स्वप्न अनुभव आने शुरु हुए। मैंने कल्कि बाल वाटिका पैनल से पूछकर नियमित उपचार करने प्रारम्भ किये-जिसका परिणाम यह हुआ कि वर्षों से जिन जटिल समस्याओं से मैं जूझ रही थी उनका हल मुझे एक एक करके मिलने लगा।

अपनी आपबीती बताने से पूर्व मैं यह अवश्य बताना चाहूंगी कि **हमारी कुल देवी हिमाचल में स्थित मां बाला सुंदरी हैं जो मां वैष्णों का बालरूप हैं।** पिछले 18 वर्षों में मैंने व मेरे पूरे परिवार ने जिस संघर्ष का सामना किया था उससे हम सभी टूट चुके थे। दरिद्रता और कर्जे में डूबे हुए थे। इस पर मेरे पति भी अचानक बहुत बीमार रहने लगे। एक दिन मुझे स्वप्न अनुभव आया कि मेरे पति का ऑपरेशन दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल में होना है। कोई मुझे कह रहा है अपने भाई से पूछ, उससे रास्ता मिलेगा। क्योंकि मेरे दो देवरों की अकाल मृत्यु हो चुकी है, मैं यह अनुभव देखकर बहुत घबरा गई। मैंने अपने भाई को फोन करके सारी बात बताई तो मेरी भाभी (मेघना गोयल) ने मुझे कल्कि भगवान के व उनकी स्वप्न अनुभव लीला व बारह देवी देवताओं के सुरक्षा कवच के विषय में बताया। **मुझे सबसे ज्यादा आश्वस्त भाभी ने इस बात से किया कि कल्कि नाम लेने के लिये हमें अपनी जो भी कोई पूजा कर रही हो वह पूजा छोड़ने की जरूरत नहीं है।** केवल कल्कि नाम के गंगाजल की तरह अपनी नियमित पूजा में जोड़ना है। भाभी के कहने से मैंने कल्कि जी का नाम अपनी पूजा में जोड़ लिया। मेरी भाभी ने इंटरनेट के माध्यम से हनुमान जी के योगी योगिनी व दुर्गा जी की योगिनियों की प्रार्थना व उपचार भेज दिये। वह मैं **अपने पति के स्वास्थ्य की प्रार्थना** के साथ साथ नियमित करने लगी। धीरे धीरे मेरे पति के स्वास्थ्य में सुधार आने लगा।। **वाकई चमत्कार को नमस्कार कहते हैं।**

कुछ समय बाद मेरे पतिदेव की तबीयत फिर खराब हो गई और उन्हें अस्पताल में भरती कराना पड़ा। वहां मेरे पति को स्वप्न अनुभव आया, कि इनके **स्वर्गीय चाचा** (जो अभी हाल ही में मरे थे) वह मेरे पति से कह रहे हैं कि **मैं तुझे अपने साथ ले जाने आया हूँ।** इस स्वप्न अनुभव के बाद मेरे पति की हालत बहुत बिगड़ गई और वे बोले मैं जा रहा हूँ। मैंने घबरा कर मेघना को फोन किया और सारी बात बताई। उसने मेरे पति को फोन देने को कहा और फोन पर ही 5 रूपये हाथ में लेकर यमुना जी के वस्त्रों का संकल्प करवाकर प्रार्थना * पीछे पीछे बुलवाई। **प्यारे बच्चों चमत्कार को नमस्कार कहते हैं मैं हैरान रह गई कि इस प्रार्थना और उपचार के 10 मिनट के अंतराल पर ही मेरे पति बिलकुल सामान्य अवस्था में आ गए।** अगले ही दिन मैं गौरी शंकर मंदिर चांदनी चौक में यमुना जी का वस्त्रों का संकल्प पूरा करने गई। वहाँ पर मैं पंचामृत का अभिषेक भी डोल में बनाकर ले गई। मंदिर में पंडित जी ने कहा कि शाम को आप अभिषेक नहीं कर सकते, इसलिए इस पंचामृता का भोग शंकर जी को लगेगा। मेरी तो खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। इस घटना से मेरा और मेरे पति का विश्वास कल्कि जी से और जुड़ गया। मेरे पति तब से लेकर आज तक (लगभग डेढ़ वर्ष) 5 रुपये का सिक्का रोज यमुना जी का जीवन दान के लिये हाथ लगाते हैं। मेरी भाभी ने मुझे कल्कि भगवान का सारा साहित्य दिया और दो कुण्डिय हवन करना भी सिखाया। अब मैंने अपनी नियमित पूजा में कल्कि जी के नाम के साथ कल्कि भगवान का हवन और मां बगलामुखी दो कुण्डिय हवन भी जोड़ लिया है।

जब दो बेटों की शादी निर्विघ्न संपन्न हुई

मैं आपको यहाँ पर यह भी बताना चाहूंगी कि वैभवता की कभी हमारे घर में कमी नहीं थी। लेकिन पिछले 18 वर्षों में जादू-टोना-तांत्रिक व अघोरी प्रहारों ने हमें विनाश की ओर ढकेल दिया। इसके बहुत सारे प्रमाण मैंने अपने बुरे दिनों में देखे। मन में हमेशा एक भय बना रहता था। मेरे दोनों बेटे जिनकी आयु 32 और 33 वर्ष है उनकी शादी होने के रास्ते भी नहीं मिल रहे थे। जब मैंने मां बगलामुखी के **दो कुण्डिय** हवनों का संकल्प लिया और हनुमान जी की शनिवार की कोलकाता से सुश्री श्रुति सर्राफ से पूछकर तांत्रिक को काटने की पूजा का संकल्प लिया तो मुझे **ऐसे स्वप्न अनुभव आते थे जिनसे दिल दहल जाता था।** मुझे बीते 18 वर्षों से एक हाथ एक आदमी और एक औरत हमेशा हमारा अनिष्ट करते दिखाई देते थे। वह कलियुगी औरत तो हमेशा मुझे कहती थी कि मैं तेरे दोनों पुत्रों का विवाह नहीं होने दूंगी और तेरे पति को भी जीवित नहीं छोड़ूंगी। इन उपचारों के दौरान मुझे यह सभी कलियुगी शक्तियाँ स्वप्न अनुभव में **हारती हुई दिखाई देने लगीं।** इसके परिणाम स्वरूप मेरे दोनों बेटों का भय भी उनके मन से निकलने लगा। वह दोनों भी कल्कि जी के पूजा उपचारों में लग गए। अब हमारा पूरा परिवार कल्कि जी की आराधना से जुड़ गया। हम इतने वर्षों से जिन तांत्रिक अघोरी बंधनों में उलझे थे उनसे हम निकलने लगे और अब शुरू हुआ हमारे घर में **खुशियों का आवगमन।**

जब मामाजी की कड़वी व डराने वाली बातों ने वर्षों के संशयों को धो डाला

16 मई 2013 को रोहिणी के वात्सल्य मंदिर में कल्कि जी की मूर्ति स्थापना के दौरान मैं मामाजी से पहली बार मिली। वहां मामाजी की कड़वी व डराने वाली लेकिन सच्ची बातों ने मेरे मन के कई संशयों को धो डाला। पहले मैं सोचती थी कि मैं ऐसे ही इस दुनिया से चली जाऊंगी। लेकिन मामाजी से सत्संग के बाद मैंने यह प्रतिज्ञा की कि मैं अपने बच्चों और परिवार को रोते बिलखते नहीं छोड़ूंगी। प्रभु श्री

कल्कि ने जो रास्ता मुझे दिया है, **मैं उनसे पुन: वैभवता मांगकर लूंगी क्योंकि वही तो मेरे सच्चे पिता हैं।** उसी रात मुझे स्वप्न अनुभव आया कि मामाजी मेरे घर आए हैं। मैं उनसे कह रही हूँ कि मुझे कल्कि नाम का **कल्प वृक्ष अपने परिवार के लिये बोना है।** अर्थात मैं अपनी विचारधारा बदलूंगी और जीतूंगी।

शादी का एक पर्सेंट का संकल्प लेकर देखा /वाणी अनुभव

आप सभी को मामाजी से सतसंग का एक प्रसंग मैं जरूर बताना चाहूंगी जिसे पढ़कर मैं ही नहीं आप भी बहुत हंसेंगे। मामाजी ने मुझे मेरे बेटे की शादी कि चिंता जताने पर बताया था कि मैं उनकी शादी में जो रुपया लगेगा उसके एक प्रतिशत का संकल्प ले लूं कि वह रुपया मैं कल्कि जी के प्रोजेक्ट में लगाऊंगी। संयोगवश मेरे बेटे को देखने के लिये उसी दिन लड़की वालों को आना था और उनका एस्टीमेट बीस से पच्चीस लाख तक का था। मैंने घर जाकर खुशी खुशी संकल्प किया और प्रार्थना की कि हे कल्कि भगवान मेरे बेटे का यह पच्चीस लाख का जो रिश्ता आ रहा है इसे करवा दीजिए मैं एक प्रतिशत शेयर का संकल्प ले रही हूं। उसी रात मुझे स्वप्न अनुभव आया कि मेरे बेटे की शादी हो गई है। उसकी पत्नी उसके साथ खड़ी है। पीछे से **वाणी अनुभव** आता है कि तुम्हारी बहू बेटे को घर जमाई बनाकर ले जाएगी। घबराकर मेरी आँख खुल जाती है। उठते ही मैंने अपनी भाभी को फोन किया तो वो कहने लगी बड़ा अजीब सा अनुभव है आप मुझे थोड़ा समय दो। उस दिन मैं जब पूजा करने बैठी तो मुझे अपने अनुभव का अर्थ खुद समझ आ गया कि पच्चीस लाख का रिश्ता अगर लेना है तो मुझे बेटे को घर जमाई बनाने के लिये तैयार रहना चाहिए। मैंने उसी समय प्रभु श्री कल्कि से क्षमा मांगी और संकल्प को पुन: लेकर प्रार्थना बदली कि प्रभु मुझे सुंदर और सुशील बहुएं दिलवाइये जो मेरे घर परिवार को जोड़कर रखें।

इस बीच में बहुत से रिश्ते हमने अपने बेटे के लिये देखे पर बात नहीं बन रही थी। नवम्बर 2013 में मुझे स्वप्न अनुभव हुआ कि मैं अपने बेटे की जन्म पत्री लेकर जा रही हूँ। **मुझे 9 ब्राह्मण दिखाई देते हैं** जो मुझसे बोल रहे हैं कि यह पत्री भृगुराज से बचवाओ (सुनो)। इस पर मैं कहती हूँ कि नहीं मेरे बेटे की पत्री तो अब कल्कि नारायण ही बाचेंगे (सुनाएंगे)। मैंने अगले ही दिन अपने बेटे की पत्री कल्कि भगवान के चरणों में रख दी। ठीक 2 दिन बाद मेरे बेटे का जो रिश्ता आया वहाँ उसकी बात बन गई। सबसे ज्यादा सुखद अनुभव यह रहा कि मुझे अपने दोनों बेटों की शादी साथ साथ होते दिखाई दी और ऐसे ही हुआ। मेरे बड़े बेटे का रिश्ता 22 जनवरी 2014 को पक्का हुआ और छोटे का 26 जनवरी 2014 को। बड़े बेटे की शादी 4 फरवरी 2014 को हुई है और छोटे की 3 मार्च 2014 को।

मैंने रिश्ता पक्का होने के दिन से लेकर शादी की सभी रसमें पूरे होने तक प्रति दिन 1 रुपये 2 बताशे से सभी देवी देवताओं से प्रार्थना व उपचार किये और उसी का यह फल रहा कि मेरे दोनों बेटों का विवाह बिना किसी विघ्न और क्लेश के सम्पन्न हुआ। जिस दिन मेरी बड़ी बहू विदा होकर घर में आई उसके घर में घुसने से पहले हमारी गाड़ी में से 5 लड्डुओं के डिब्बे हमारे घर से पहले पड़ने वाले बड़े चौराहे पर खुद ही गिर गए और एक डिब्बा लड्डुओं का खुल कर चौराहे पर बिखर गया। हमने वह डिब्बे वहाँ से नहीं उठाए कि कल्कि भगवान ने किन्हीं अतृप्त प्रेत-योगी योगिनी-छिन्न मस्तिका आदि शक्तियों को उनका भाग दिलवा दिया है।

साथियों मैंने अपने घर के उत्सव व कार्यों में जब कल्कि जी और अपनी बाला सुंदरी मां (मां वैष्णों का बाल रूप) को हर जगह बड़ा माना तो समस्त दैवी शक्तियों की कृपा मुझे हर पग पर महसूस हुई और भाभी की बात गूंजती थी कि...

कल्कि सब देवन के देवा सभी देवता करते सेवा। जो कल्कि का नाम उचारे उसको मिलते सभी सहारे॥ *(श्री कल्कि चालीसा श्लोक न०7)*

हमारे आने वाले महमानों ने पूछा कि क्या बात है आपके काम तो अब स्वत: ही पूरे होते जा रहे हैं। लेकिन मैं जानती हूं कि मेरे प्रभु श्री कल्कि व मेरी मां बाला सुंदरी ने अपनी कृपा की छत्र छाया हमारे ऊपर रखी हुई है। मैंने जैसा शादी का एक प्रतिशत का संकल्प मामाजी के कहने से करा था वह पूरा निभाया। सच कहूँ तो ऐसा लगता है आजकल हमें नहीं कल्कि जी को भी जरा ज्यादा ही रूपयों की जरूरत है (जरा आपको हंसी तो आएगी) कहाँ तो 33 वर्षों में एक बेटे की भी शादी नहीं हो रही थी वहीं मात्र 39 दिनों में दोनों बेटों की शादी करा दी। मैं आप सभी को अपने छोटे बेटे की शादी में जो अनुभव हुए हैं भविष्य में कल्कि जी की कृपा रही तो अवश्य अवगत करवाऊंगी।

कर्म करें भागें नहीं

(राजपुर रोड पर 29 मार्च 2014 शनिवार को हुई अनुभव गोष्ठी में कुमारी उर्वी गुप्त द्वारा साबड़-पातक पर बोले गए शब्द)

जब मनुष्य पैदा होता है तो उसे साबड़ कहते हैं और जब मनुष्य मरता है तो उसे पातक कहते हैं। हम इन दिनों में पूजा नहीं करते। अच्छा मैंने मान लिया कि आप पूजा नहीं करते तो ऐसे में आप व्यसन करना भी छोड़ दें जैसे- पान खाना, पानमसाला खाना, सिगरेट पीना, तंबाकू खाना आदि।

मेरे दादू ने मुझे सिखाया कि शास्त्रों के अनुसार दोनों दशाओं साबड़ और पातक में घर की लड़कियाँ / कुंवारी कन्या अथवा पंडित जी प्रतिदिन पूजा कर सकते हैं। यह दोनों (साबड़ और पातक) शरीर में लगते हैं मन में नहीं। सो हम खड़े होकर अथवा आसन पर बैठ कर मन से संकल्प और उपचार कर सकते हैं।

—कु. उर्वी गुप्त
(मामाजी की पौत्री)
01123973383

कलियुग की चालों से बचकर अपने अहंकार को मारो

47 दिनों में दो द्वादश ज्योर्तिलिंगों काशी विश्वनाथ व बैद्यनाथ धाम में कल्कि जी विराजे

प्यारे बच्चों, —*मामाजी (9136377829)*

आओ बताएं आज तुम्हें ''त्रिकोण-त्रिशूल'' पर बसे दो शहर साथियों इस भारतवर्ष की धरा धाम में सिर्फ दो स्थान ऐसे हैं जो भगवान शंकर ने धारण किए हैं। जिसमें पहला सृष्टि के आरम्भ में बसाया सम्भल ग्राम त्रिकोण पर मात्र. 12 कोस (16 वर्ग कि.मी.) में बसा जिनके तीनों कोनों पर भगवान शंकर 1. शम्भलेश्वर 2.चन्द्रेश्वर 3.भुवनेश्वर रूप में विराज कर विश्वकर्मा द्वारा बनाए गए 68 तीर्थ 19 कूप की रक्षा करते हैं। दूसरा है काशी (वाराणसी-बनारस) जिसे भगवान शंकर ने अपने त्रिशूल पर धारण किया हुआ है।

सम्भल

अब एक संहारक ने दूसरे संहारक से हाथ मिलाया जबकि सर्वदा

ब्रह्मा जिनसे प्रेरित हो सृष्टि की रचना करते हैं
विष्णु पोषक बन कर जन जीवन को सुख से भरते हैं
शंकर बन विकराल काल के द्वारा सब कुछ हरते हैं

प्यारे बच्चों इस 28 वें कल्प में तो कलियुग विशाल परिवार वाला राक्षस अपने युग शुरु होने से पहले ही द्वापर में कृष्ण अवतार में ही आ धमका था। जिसमें स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने गदा युद्ध के दौरान अपने भाई बलराम को समझाने पर कि ठीक है अर्जुन ने इशारा करके दुर्योधन की जंघा पर भीम से वार कराया है उन्हें मनाते हुए कहा था कि भइया एक तो यह हमारी बुआ के लड़के हैं दूसरे द्रौपदी ने प्रतिज्ञा की थी मैं जब तक दुर्योधन की जंघा के खून से अपने बाल नहीं धोऊँगी बाल नहीं बाँधूंगी। आप क्रोध न करें शांत हो जाएं। लेकिन बलराम जी नहीं माने तो भगवान श्री कृष्ण ने कहा तो भइया समझ लो अब तो कलियुग आ गया अर्थात् द्वापर में कलियुग का प्रवेश।

जब राजा परीक्षित से कलियुग ने रहने को स्थान मांगा

उतरा के गर्भ पर जब **अश्वत्थामा** ने ब्रह्मास्त्र छोड़ा तो भगवान श्री कृष्ण इसके मुख के द्वारा सुदर्शन चक्र से घुसकर ब्रह्मास्त्र को काटा और गर्भ में पल रहे परीक्षित की रक्षा की थी जिसे (उर्वी की तरह जन्म लेते ही)* छोटी आँख से परीक्षित की आँख तलाश कर रही थी कि इन आए मेहमानों में से वह सुदर्शन चक्रधारी कहाँ हैं जिसने मेरी रक्षा की थी। प्यारे बच्चों यह आप सबको सर्व विदित है ही कि इन्हीं राजा परीक्षित से कलियुग ने अपने रहने के लिये जगह मांगी थी और उनके द्वारा सोने (स्वर्ण) में जगह मिलते ही वह उनके मुकट पर अपने सूक्ष्म रूप (अहंकार) में बैठकर श्रंगी ऋषि के गले में सर्प गिरवाकर सातवें दिन उनकी उसी सर्प द्वारा हत्या करवा दी थी।

तो प्यारे बच्चों जिन श्री कल्कि भगवान को कलियुग का पलायन (मारकर) सत्युग की स्थापना के लिये 4 लाख 32 हजार वर्ष बाद आना था आज (पालनकर्ता विष्णु) संहारक रूपी कल्कि कलियुग को मारकर सतयुग की स्थापना को आ रहे हैं। कलियुग में शास्त्रों तो क्या श्रीमद भागवत के बारहवें स्कंध के द्वितीय अध्याय में कलियुग के धर्म में कलियुग ने अपनी सारी बांधी मर्यादाओं को भी तोड़ दिया है। इसलिए श्री कल्कि जी की महज 5090 वर्ष में एक संहारक के रूप में भारत भूमि जो ऋषियों देवी देवताओं की भूमि है उसकी रक्षा हेतु आना पड़ा है।

तू नहीं और सही श्री कल्कि जी को तो प्रकट होना ही है

प्यारे बच्चों ऐसे में हमने पाया कि आज भगवान शंकर-भगवान कल्कि मिलकर स्वप्न अनुभवों द्वारा ऐसे ऐसे काम हम अदनों (छोटे छोटे हनुमान जी-रामकृष्ण परमहंस देव के शिष्यों) से करा रहे हैं जो हमारी चाहतों में शेख चिल्ली की तरह थे। लेकिन पूरा होने पर हम अपने चुटकी भरके एक नहीं अनेक बार देखते हैं कि क्या यह वास्तव में हो गया! जैसे इस्कॉन टैम्पल-दानघाटीगोवर्धन-नैमिषारण्यतीर्थ-वैद्यनाथधाम-विध्यांचल-दशाश्मेघघाट बड़ी शीतला मां मंदिर-कूष्मांडा मां (काशी) आदि। ऐसे में ही अचम्भा जब होता है कि मात्र 47 दिनों में द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से वैद्यनाथ धाम ज्योतिर्लिंग (जहाँ मां सति के हृदय पर रावण द्वारा 9 शीश काटने के बाद शंकर भगवान द्वारा दिया (मां पार्वती द्वारा प्रतिदिन पूजित शिवलिंग) स्थापित है।) यहाँ 19 जनवरी 2014 को भगवान श्री कल्कि को वैद्यनाथ धाम में (स्वप्न अनुभव में मई 2013 में दिखाए सिर्फ 140) भाग्यवानों को बुलाकर वी. आई. पी. स्थल पर विराजमान कराया।

वहीं 8 मार्च 2014 को अबकी बार वैद्यनाथ धाम की जगह सब स्थानों (दिल्ली, सीकर, सूरत, कोलकाता, गुड़गाँवा) से नहीं सिर्फ कोलकाता से 7 भक्तों को बुलाकर काशी विश्वनाथ में अक्षय वट में मात्र 66 फुट की दूरी पर स्थापित कराया।

भगवान श्री कल्कि हमारे कल्कि वालों के गुरु श्री हनुमान जी एवं त्रेता युग से भगवान श्री कल्कि की राह निहारती मां वैष्णवीं भगवती श्री दुर्गा के साथ 8 मार्च 2014 को अक्षय वट में विराजे।

इसी संदर्भ में आज तुम्हें 3 दिन की भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना के कुछ मन को झंकृत कर रहे दृश्य प्रस्तुत हैं

ध्यान योग्य- काशी विश्वनाथ के दर्शन के उपरांत सभी विवाहित स्त्री अपने सुहाग की लम्बी आयु की कामना के लिये मात्र 7 फुट की दूरी पर सटे अक्षय वट पर आती हैं।

प्यारे बच्चों इस तीन दिन के प्रवास में मेरे सामने कई बार 19 अक्टूबर 2012 कुष्मांडा मां (कांशी) में, 13 मई 2013 को दशाश्मेघ धाट.(काशी), 13 मई 2013 खिचड़ी धाट (कांशी) व 12 मई 2013 विंध्यांचल (विंध्यवासिनी) पर जहाँ दो संहारक (भगवान शंकर-भगवान श्री कल्कि) की साफ मिली भगत नज़र आती थी। वहीं 8 मार्च 2014 को बार बार श्री मनोज पाण्डेय की परेशान सूरत नज़र आती थी। उसपर बरबस यही शब्द मरहम की तरह हृदय पटल को सन्तावना देते थे श्री कल्कि जी को तो प्रगट होना है वह किसी के आधीन तो नहीं हैं। यह तो अदले का बदला वाला अवतार है। तू नहीं तो और सही वाला ममता रहित अवतार है। नासमझ (मामाजी अपने को) संभल कर कलियुग की चालों से बचकर चल। कल्कि जी से कहता रह— हे प्रभु तुम्हें तो प्रगट होना है, अपना काम किसी से तो लोगे, तो मुझसे ले लो। जैसे रखोगे रहूंगा, जैसा कहोगे करूंगा, अपने कामों से, अपने पास से मत हटाओ।

** यह एक रहस्यमयी रहस्य है जिसे भगवान श्री कल्कि की कृपा से जल्द ही आप शीघ्र प्रकाशित होने जा रहे ग्रंथ ''भविष्य दर्शन'' में पढ़ेंगे ।*

मामाजी आचार्य गणों द्वारा संकल्प कराते

अक्षय वट में आचार्य राजा सुश्री रश्मि गनेरीवाल से पूजा कराते

मामाजी विश्वकर्मा जी के साथ

अगले अंक में पढ़ें

22-23 मार्च को असरोही में श्री कल्कि मंदिर-महोत्सव की झलकियाँ

कल्कि जी देने के बाद चाहते भी हैं बन पड़े तो भक्त उचाईयों से धरातल (जैसा पत्री में लिखा है) पर आने से बचें

लेखिका- इंदु बंसल (09818416191) लिपिका- इंदु गुप्त

धरातल से उठकर जो उचाईयों पर पहुँचे हैं मामाजी चाहते हैं कि वह पुन: धरातल पर न आएं। श्री कल्कि नाम शुरु करने से पहले भक्त जिस धरातल पर था और कल्कि नाम लेकर 2-3 वर्षों में कल्कि भक्त कहाँ से कहाँ पहुँच गया, कल्कि जी स्वप्न अनुभवों द्वारा उसे और कहाँ से कहाँ ले जाना चाहते हैं। स्वप्न अनुभवों द्वारा उसे उजागर करते हैं। सत्संगों में मासिक पत्रिका द्वारा मामाजी यही बताना चाहते हैं कि कलियुग जो तुम्हें धरातल पर लाना चाह रहा है उसकी चालों को सफल मत होने दो। जिस प्रकार एक एम. एन. सी में काम करके आदमी बेहतरीन उचाइँयों पर पहुँच जाता है फिर वह सोचने लगता है कि एम. एन. सी की सहूलियते तो मेरे भाग्य मे हैं बनी रहेंगी अब काम की कोई परवाह नहीं। अब तो मैं यहाँ मालिक जैसा हो गया। दोस्तों वह कुछ ही समय बाद एम. एन. सी द्वारा निकाले जाने पर उसी धरातल (स्टेटस) पर आ जाएगा जहाँ से वो बढ़ा था। इसी प्रकार कलियुग कल्कि भक्त को उसी स्टेटस पर लाना चाहता है जिस स्टेटस से वह असम्भव से सम्भव करने वाले कल्कि नाम से ऊँचा उठा था।

ऊपर चढ़ेन को नीचे गिराए रहे, नीचे पड़ेन को ऊपर उठाए रहे —श्री गुरु जी

अर्थात कल्कि जी को तो प्रचार चाहिए जो प्रचार करेगा वह ऊँचा जाएगा और जो आलस्य, प्रमाद व संकोच व भावुकतावश प्रचार नहीं करेंगे वह स्वत: नीचे गिरेंगे लेकिन जो पत्री में लिखा है उससे ज्यादा नहीं

सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 5 अप्रैल 2014 एवं 3 मई 2014
स्थान : एम.के. हाउस, सी-2/8 अशोक विहार फेज-2
दीप सिनेमा के सामने, नई दिल्ली-52
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री राकेश गोयल, सुश्री सुषमा गोयल (9899698240)
संचालिका- सुश्री इंदू बंसल (011-32448401)

दिनांक : शनिवार 12 अप्रैल 2014 एवं 10 मई 2014
स्थान : जी-3 थर्ड फ्लोर,मित्रद्वीप अपार्टमेंट
पटपड़गंज दिल्ली-92
समय : दोपहर ३ बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)
संचालिका- सुश्री मेघना गोयल (913677829)

Registered with the Registrar of Newspaper for India under Licence No. Delhi-N/2005/15596 Postal D. No. DL (DG)-11/8061/2012-2014

1 से 8 तक | 25 ग्राम | अप्रैल 2014 | मूल्य 10 रु

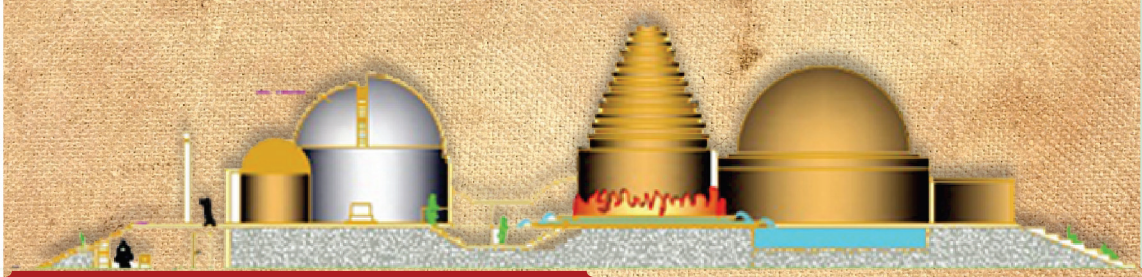

लिखते लिखते

कल्कि जी की मूर्ति स्थापना की मंजूरी पीतमपुरा नई दिल्ली की मैनेजमेंट से मिली

कल्कि संग्रहालय में आप देखेंगे

*भारत भूमि पर हमारा जन्म हमारे सौभाग्य की गाथा गाता है * भारत भूमि श्री हरि नारायण की भूमि है * भगवान विष्णु के दशावतार * अभी कल्कि क्यों? * कलियुग के लक्षण * कल्कि जी ने अवतार क्यों लिया? * हनुमान जी/रामकृष्ण परमहंस हमारे गुरु क्यों? * प्राचीन भारत एवं आधुनिक भारत में अंतर * कल्कि जी की पुकार क्यों करें? * कल्कि जी की स्वप्नानुभव लीला * कल्कि की पुकार ही सार है * कल्कि जी की भक्ति कैसे करें? * कल्कि जी का प्रचार कैसे करें? * धर्म/भक्ति/ज्ञान और कल्कि * श्री कल्कि साहित्य*

अंधा है वह दिवस जहाँ आदित्य नहीं है
अंधा है वह धर्म जिसमें साहित्य नहीं है

श्री कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशालाएं

*** दिल्ली विश्वविद्यालय* नोएडा * पंजाबी बाग * पटपड़गंज * गगन विहार * यमुना विहार * महावीर नगर * ग्रीन पार्क**

विंध्याचल में कल्कि मूर्ति स्थापना के बाद श्री कल्कि जी के श्री कल्कि धाम की ओर बढ़ते कदम जहाँ साधु संत आवागमन हवन, भजन, कीर्तन आगंतुको के ठहरने के लिए बहुत उचित मूल्य पर सात्विक भोजन की व्यवस्था, कल्कि जी के प्रचार-प्रसार का कार्य निरंतर चलेगा।

श्री कल्कि बाल वाटिका

के सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें—

☎ 9312533445, 9136377829, 9811858723

न करने का न करवाने का झंझट बस फोन करते रहें जब तक काम पूरा न हो मंदिरों में भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति, पोशाक, लाईट प्रभारी : हर्षित गुप्ता, (मनु) 9999885277) अंकित गड़ौदिया (9968154304) राहुल अग्रवाल (9891879718) अलका गोयल (9811281271)

❖पालनपुर ❖देहरादून ❖असरोही ❖कोलकाता ❖चेन्नई

1903/3, पहली मंजिल, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006 सम्पर्क : 23886646, 23866661

हाउस नं. 4116, कसेरू वालान, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, सम्पर्क : 23587079

सी 0-2/16, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110035

कॉलेज कम्पाउन्ड, गीता सोसाईटी, पालनपुर : 385001, गुजरात, सम्पर्क : 02742-258068, 09824968440

जी 97, नेहरु कालोनी, देहरादून (उत्तरांचल), सम्पर्क : 0135-2671643, 09837343560

2 नम्बर, हाईट रोड, लिलुआ, हावड़ा-711204 (कोलकाता)

आभार/Ack.: श्री कल्कि पुराण, ऋग वेद, ऋषि प्रसाद, स्वामी राम सुखदास, नवभारत टाइम्स

योगेश प्रकाश गुप्ता, दिल्ली द्वारा प्रकाशित व अन्य बालकों के ज्ञानवर्धन हेतु

प्रिंटर्स : शिवानी ऑफसैट, ए-36 नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (यू.पी.)

पारस प्रिंटिंग प्रैस, पटपड़गंज, नई दिल्ली